Department of Philosophy
D. B. COLLEGE, JAYNAGAR,
MADHUBANI (BIHAR)
(A Constituent unit of L. N. Mithila University K. Nagar, Darbhanga)
Paper I, Indian Philosophy (BA Part I Honours)

By:- Dr. Kumar Sonu Shankar
Assistant Professor (Guest)
kumar999sonu@gmail.com
8210837290, 8271817619
Lecture No. 10, Oct.
October 15, 2020

BA Part I Honours

व्याप्ति के विरुद्ध चार्वाक का आक्षेप, भाग 1

व्याप्ति को अनुमान का तार्किक आधार कहा जाता है। साधन और साध्य के अव्यभिचारित, अनौपाधिक, सर्वकालिक, सर्वदैशिक, संबंध-ज्ञान को 'व्याप्ति ज्ञान' की संज्ञा दी जाती है। अनुमान में व्याप्ति-ज्ञान की समस्या अत्यंत जटिल एवं दुर्बोध है। व्याप्ति ज्ञान, जो अनुमान का आधार स्तंभ है, की जटिलता और दुर्बोधता के कारण चार्वाक ने अनुमान प्रमाण की उपेक्षा की है।

व्याप्ति के विरुद्ध चार्वाकों के मुख्य आक्षेप निम्नलिखित है:--

चार्वाक प्रश्न करते हैं- की व्याप्ति का ज्ञान कैसे होता है? प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द, उपमान, अथवा अन्य कौन-सा प्रमाण व्याप्ति ज्ञान का साधन है?

इस प्रश्न का उत्तर देते हुए चार्वाक कहते हैं कि प्रत्यक्ष दो प्रकार के होते हैं- बाह्य प्रत्यक्ष तथा आन्तर प्रत्यक्ष। चार्वाक मतानुसार व्याप्ति ज्ञान न तो बाह्य प्रत्यक्ष से संभव है और आन्तर प्रत्यक्ष से। बाह्य प्रत्यक्ष तो, चार्वाक के मतानुसार इंद्रियार्थ सन्निकर्षजन्य ज्ञान है और वह वर्तमान तथा उससे संबंधित वस्तुओं का ग्राहक है। इसलिए व्याप्ति, जो कि भूत-भविष्य-वर्तमान त्रयकालिक संबंध की घोषणा करता है; का बाह्य प्रत्यक्ष संभव नहीं है। पुनः व्याप्ति ज्ञान आंन्तर प्रत्यक्ष के माध्यम से भी नहीं हो सकता क्योंकि आन्तर प्रत्यक्ष भी बाह्य प्रत्यक्ष से स्वतंत्र नहीं है। मन बाह्य इंद्रियों से स्वतंत्र रहकर बाह्य पदार्थों का ज्ञान प्राप्त नहीं कर सकता। अतः बाह्य प्रत्यक्ष के अभाव में व्याप्ति ज्ञान आन्तर प्रत्यक्ष द्वारा भी संभव नहीं है।

चार्वाक मतानुसार व्याप्ति ज्ञान अनुमान प्रमाण द्वारा भी संभव नहीं है। इसके मुख्यतः दो कारण हैं- पहला अनुमान तो प्रत्यक्षेतर प्रमाण है। अर्थात् प्रत्यक्ष के अभाव में अनुमति संभव नहीं है। चूंकि व्याप्ति-ज्ञान प्रत्यक्ष ज्ञान का विषय नहीं है, अतएव इसकी अनुमति भी संभव नहीं।

द्वितीयतः, व्याप्ति को अनुमान पर आधारित मानने से चक्र दोष या अनवस्थादोष उत्पन्न होता है। पुनः, अनुमान, जो स्वयं व्याप्ति ज्ञान पर आधारित है, इसे व्याप्ति ज्ञान का कारण मानने से अनवस्था दोष भी उत्पन्न होता है, क्योंकि यदि एक व्याप्ति 'क' को अनुमान द्वारा प्राप्त हो, जो अनुमान अन्य व्यक्ति 'ख' पर आधारित है और पुनः वह व्याप्ति किसी अन्य अनुमान 'ग' द्वारा ज्ञात हो, तो इससे अवस्था दोष उत्पन्न होता है।

By:- Dr. Kumar Sonu Shankar
Assistant Professor (Guest)
kumar999sonu@gmail.com
8210837290, 8271817619

व्याप्ति ज्ञान शब्द प्रमाण द्वारा भी प्राप्त नहीं हो सकता। इसके भी कई कारण हैं। पहला वैशेषिकों ने शब्द प्रमाण का अंतर्भाव अनुमान में कर दिया है। चूंकि व्याप्ति अनुमानगम्य नहीं है अतः यह शब्दगम्य भी नहीं है।

दूसरा यदि शब्द प्रमाण का अंतर्भाव अनुमान में न किया जा सके तो भी इस शब्द प्रमाण आप्त-पुरुष के वचन के रूप में ही व्याख्यायित होता है। यहाँ चार्वाकों की आपत्ति होती है कि किसी पुरुष को क्यों और किस आधार पर 'आप्त'* की संज्ञा दी जाए। चार्वाक वेद और वेद वचनों को स्पष्ट शब्दों में असत्य, असंगत और पुनरुक्ति की संज्ञा देते हैं। साथ ही परमार्थवादियों को वे धूर्त और पाखंडी भी कह देते हैं।

व्याप्त ज्ञान के अवबोधक के रूप में शब्द प्रमाण को अस्वीकृत करते हुए चार्वाक कहते हैं कि शब्द के अर्थ ग्राहकता के लिए शब्द और अर्थ के नियत साहचार्य का सार्वभौम ज्ञान अनिवार्य है, जो स्वयं एक प्रकार का व्याप्ति ज्ञान है। अतः शब्द व्याप्ति का अवबोधक नहीं हो सकता क्योंकि यहां चक्र दोष उत्पन्न होगा।

चार्वाक के मतानुसार यदि यह कहा जाए कि ऋषियों द्वारा स्वीकृत होने के कारण व्याप्ति ज्ञान होता है तो इससे स्वार्थानुमान का उच्छेद होगा क्योंकि स्वार्थानुमा में व्याप्ति प्रतिपादक वाक्य का निर्देश अन्य व्यक्ति द्वारा प्राप्त नहीं किया जाता।

चार्वाक व्याप्ति-ज्ञान-विषयक इस संभावना का भी खंडन करते हैं कि व्याप्ति ज्ञान का साधन उपमान है। उपमान की सीमा संज्ञा-संज्ञी-संबंध तक ही है, अतः उपमान के द्वारा भी अनौपाधिक व्याप्ति संभव नहीं है।